राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 25.00 संख्या 344
संहार
नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव

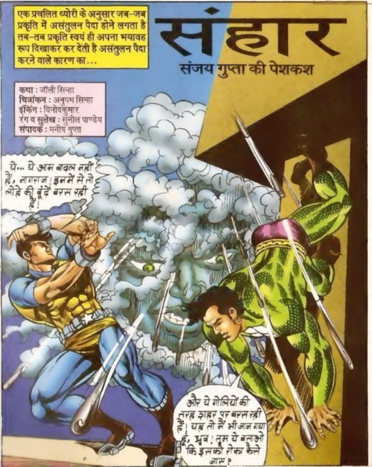

visit us at: www.rajcomics.com

भारती कम्युनिकेशंस के सौजन्य से आज हम आपको एक अनोखा शो दिखाने जा रहे हैं! ऐसा शो टेलीविजन के इतिहास में पहली बार दिखाया जा रहा है! इसकी लोकप्रियता का अंदाजा सिर्फ इसी से लगाया जा सकता है कि इस शो का सारी दुनिया के अलग-अलग टेलीविजन चैनलों पर सजीव प्रसारण किया जा रहा है!
जिन देशों में रात है वहां की सड़कें तो सुनसान हैं ही, लेकिन ऐसा नजारा उन देशों की सड़कों का भी है जहां पर इस वक्त सूरज चमक रहा है!
कारण सिम्पल सा है! हर शख्स आज अपने टी॰वी॰ सैट के सामने बैठा रहना चाहता है!
हम एक बात और साफ कर दें, और वह ये कि ये शो चैरिटी शो है! इस शो से होने वाली सारी कमाई दुनिया भर के उन बच्चों का भविष्य संवारने में लगाई जाएगी, जिनका दुनिया में कोई नहीं है! हमारे और आपके अलावा!
तो दोस्तो, बहुत सस्पेंस हो गया! बहुत बातें हो गईं! अब वक्त शो को शुरू करने का है!
और यह नायाब शो दो ऑल टाइम ग्रेट सुपर हीरोज के बीच रेसिंग इवेंट का है!

नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव के बीच रेसिंग मुकाबले का! और इस जोड़ी की तरह यह रेस भी अपने आप में अनोखी है! आइए हम आपको इस रेस के नियमों से परिचित करा दें!
तुम दोनों इस रेस के नियम पहले से ही जानते हो! लेकिन फिर भी मैं एक बार नियमों को दोहरा देता हूं!
तुम्हारे सामने दो किलो-मीटर गहरी एक घाटी है, और घाटी के दूसरी तरफ वह चोटी नजर आ रही है जिसका नाम 'के-११' है!

इस रेस का अन्त वही चोटी है! तुम को दाहिनी तरफ से होते हुए उस चोटी तक पहुंचना है नागराज और सुपर कमांडो ध्रुव बाईं तरफ से 'के-99' की ओर बढ़ेगा! तुम दोनों ही अपनी उन शक्तियों और साधनों का प्रयोग कर सकते हो जिनका प्रयोग तुम अपराधियों को पकड़ने के लिए करते आए हो!... सिवाय स्टार हेलीकॉप्टर के! और ऐसे जो उस चोटी तक पहले पहुंचेगा वही जीतेगा! रेस ठीक एक मिनट बाद शुरू होगी! गन की आवाज के साथ!
बेस्ट ऑफ लक टू बोथ ऑफ यू!
कितना खूबसूरत दृश्य है न, नागराज!
दृश्य तो मुझे बहुत अच्छा लग रहा है लेकिन ये ठंड अच्छी नहीं लग रही है!
ठंड तो हमारी रेस शुरू होते ही दूर हो जाएगी!
फिलहाल तो सामने का खूबसूरत नजारा देखो! प्रकृति ने पृथ्वी को कितनी अलग-अलग तरीके की चीजों से सजाया है! जंगल, पहाड़, नदियां, बादल और सागर! कैसे सोचा होगा प्रकृति ने यह सब?
तुम तो ऐसे कह रहे हो जैसे प्रकृति कोई जीती-जागती चीज हो! वैसे एक बात तो बताओ! प्रकृति को हमेशा स्त्री क्यों समझा जाता है? 'मदर नेचर' या प्रकृति मां ही क्यों कहा जाता है?
वह शायद इसलिए क्योंकि प्रकृति एक मां की तरह हमारा पालन-पोषण करती है! हम-को अपने खजाने दे-देकर हमको प्रगति का रास्ता दिखाती है!
और हम उन खजानों का दुरुपयोग कर-करके प्रकृति की ही रगों में प्रदूषण का जहर घोलते रहते हैं!
रेडी! गेट सेट एंड गो!
ओ! रेस शुरू हो गई! इस बारे में बाद में बहस करेंगे!
तो फिर बहस से पहले रेस जीत कर दिखाओ!

रेस शुरू हो गई-
और पूरी दुनिया में उत्तेजना की लहर दौड़ गई-
बक अप नागराज!
बक अप को कर शटअप! ये रेस ध्रुव जीतेगा!
अरे जा! नागराज की शक्तियों का ध्रुव भला क्या खाकर मुकाबला करेगा!
दिमाग से बड़ी ताकत कोई नहीं होती! और वह ताकत ध्रुव के पास है!

ये अद्‌भुत रेस शुरू हो चुकी है! नागराज और ध्रुव दोनों ही अभी ढलान पर ही फिसल रहे हैं! इस 'आइस स्लोप' पर वैसे तो स्कीइंग करने वाले काफी तेज गति से फिसलते हैं, लेकिन इन दोनों के पास 'स्की' न होने के कारण इनकी गति काफी कम है! अभी ये कहना मुश्किल है कि रेस में किसका पलड़ा भारी है!
ये रेस के कमेंटेटर का ख्याल था-
नागराज का ख्याल इससे जरा अलग था-
सर्कस में ही पला बढ़ा होने के कारण ध्रुव कलाबाजी में मुझसे ज्यादा माहिर है, इसलिए वह अपने शरीर को मोड़कर अपनी गति को बढ़ा ले रहा है और मुझसे आगे निकलता जा रहा है!
मुझे भी नया पैंतरा चलना पड़ेगा!
शीतनाग कुमार!
आदेश करो नागराज
मैं फिलहाल इस रेस में पिछड़ रहा हूं, शीतनागकुमार! तुम अपनी शीत शक्तियों का प्रयोग करके मेरे लिए बर्फ की बनी स्की तैयार करो!
ये नियम के विरुद्ध तो नहीं होगा न नागराज!
नहीं शीतनाग! तुम मेरी शक्तियों में से एक हो, और मैं रेस के दौरान अपनी किसी भी शक्ति का प्रयोग कर सकता हूं!
तब तो ठीक है नागराज! ये लो बर्फ की बनी स्की!

नागराज के प्रशंसकों में खुशी की लहर दौड़ गई-
येsss! नागराज इज द बेस्ट! अब तो नागराज के पास स्की है! ध्रुव अब उसकी स्पीड का मुकाबला कभी नहीं कर पाएगा!
करेगा! करेगा! ध्रुव कोई न कोई रास्ता जरूर ढूंढ लेगा! ध्रुव कभी हार नहीं सकता!
ध्रुव वाकई हार मानने वालों में से नहीं था-
ओह! नागराज ने शीत कुमार की मदद से स्की का इंतजाम कर लिया है! वह मुझसे आगे निकलता जा रहा है! मुझे भी अपनी स्पीड बढ़ाने का इंतजाम करना होगा!
तेजी से नीचे गिरते ध्रुव के पैर कुछ उभरी चट्टानों से टकराए-
वे चट्टानें ढलान पर तेजी से नीचे लुढ़कने लगीं, और उन पर बर्फ की पर्त चढ़-चढ़कर उनका आकार बढ़ने लगा-
यस! बन गया काम! अब बस मुझको इन चट्टानों पर चढ़कर अपना संतुलन बनाए रहना है!...
...और ऊपर वाली चट्टान से नीचे वाली चट्टानों पर कूदते जाना है!
ही ही हू हू हा हा! क्या कलाबाजियां हैं! कम ऑन ध्रुव! कम ऑन!
और तेज फिसलो नागराज, और तेज! प्लीज! हारना मत!

...ध्रुव और नागराज लगभग एक साथ ही ढलान से नीचे उतरे हैं! दोनों के ही प्रशंसकों की अपने-अपने हीरो को जिताने की उम्मीदें अभी भी बरकरार हैं! लेकिन अब मुकाबला जरा मुश्किल होता नजर आ रहा है! क्योंकि रेस के इस समतल हिस्से के ऊपर बिछी बर्फ ने क्या-क्या खतरे छिपाए हुए हैं यह किसी को पता नहीं है!
सुन्न हो रहे पैरों के कारण ध्रुव को पता ही नहीं चला कि कब उसके पैरों के नीचे की सतह जवाब दे गई-
कड़ड़
ओह! अब स्की किसी काम नहीं आएगी! इस समतल सतह को सिर्फ दौड़कर पार किया जा सकता है!
ओssss
इस हिस्से को पार करने का एकमात्र तरीका दौड़ना है! लेकिन इस ठंडी बर्फ में पैर सुन्न हुए जा रहे हैं!

और ध्रुव का शरीर पतली बर्फ को तोड़ता हुआ उस गहरे दर्रे में तेजी से गिरने लगा-
ओफ़! कहीं 'स्टार-लाइन' अटकाने तक की जगह नहीं मिल रही है!
सभी दर्शकों में सनसनी की एक लहर दौड़ गई-
ओ माई गॉड! ध्रुव खाई में गिर गया है!
घबराओ मत! ध्रुव ऐसे खतरों से कई बार निपट चुका है! वह अभी बाहर आ जाएगा!
लेकिन फिर रेस का क्या होगा? इतनी देर में तो नागराज बहुत आगे निकल जाएगा!
नागराज भी चकित था-
ध्रुव कहीं नजर नहीं आ रहा है! क्या वह बहुत आगे निकल गया है?
यह आश्चर्य की बात है! रेस शुरू करने से पहले इस पूरे रेसकोर्स को अच्छी तरह से चेक किया गया था!
पूरे रेसकोर्स पर बर्फ की दस फुट मोटी पर्त थी! जिसके टूटने का सवाल नहीं था! लेकिन फिर भी हमारी रेस्क्यू टीमें पूरी तरह से तैयार हैं!
नहीं नागराज! मैं बर्फीली सतह के ऊपर किसी भी जीवित वस्तु को महसूस कर सकता हूं! मुझे ध्रुव का कोई आभास नहीं हो रहा है!
यानी ध्रुव बर्फ की सतह के नीचे है। इसका मतलब है कि वह जरूर किसी खाई में गिर गया है। हमें उसको बचाने के लिए जाना होगा!
हमको पूरी उम्मीद है कि जल्दी ही हम ध्रुव को सुरक्षित बाहर निकाल लेंगे...
...अगर वह अब तक जिन्दा बचा होगा तो!

जल्दी करो! अगर ध्रुव किसी चट्टान के सहारे लटका होगा तो वह ज्यादा देर तक लटका नहीं रह पाएगा. तुम रस्सी के सहारे नीचे उतरो! मैं ऊपर से तुमको कवर करता हूं!
कवर बाद में करना, फिलहाल तो यहां अपनी कब्र बनने वाली है! भागो यहां से!
पर क्यों?
क्योंकि ऊपर से बर्फ का पहाड़ हम पर गिर रहा है! 'एवालांच' आ रहा है!
एवालांच और यहां पर? यह तो असंभव है! यहां पर एवालांच कभी नहीं आता!
बर्फ का वह पहाड़ दोनों को अपने अंदर दबाता चला गया-
ध्रुव अभी तक जीवित था-
ओफ़! अब हम किसको बचाएं नागराज? ध्रुव को या इन दोनों को?
ध्रुव को ढूंढने में समय लगेगा! पहले इन दोनों को बर्फ से बाहर निकालते हैं!
आऽऽऽह! किस्मत मेरे साथ है! मैं इस तरह से और ज्यादा देर तक लटका नहीं रह सकता था! लेकिन 'एवालांच' ने मेरी मुश्किल को आसान कर दिया है!
बर्फ के इस पहाड़ ने गिर कर एक ऐसी ढलान बना दी है जिस पर चढ़ कर बाहर निकला जा सकता है!

ध्रुव! तुम सही-सलामत खड्ड से बाहर निकल आए! शुक्र है भगवान का! लेकिन तुम्हें बचाने के लिए नीचे उतरे दो बचावकर्मी बर्फ के इस पहाड़ में दब गए हैं! और हमको पता नहीं चल पा रहा है कि वे किस स्थान पर दबे हुए हैं!
मेरी शक्तियां बर्फ के अंदर की वस्तुओं पर काम नहीं करती हैं; इसलिए मैं भी उनको ढूंढ नहीं पा रहा हूं! और अगर उनको जल्दी न ढूंढा गया तो हवा की कमी और बर्फ की ठंड उनको मार डालेगी!
शायद उनके पास ऐसे हीट 'सेंसेटिव यंत्र' हों जो बर्फ के अंदर दबे सुरक्षाकर्मियों को ढूंढ सकें!
हैलो! ध्रुव हियर! आप 'हीट सेंसेटिव' यंत्र की मदद से हमको बचावकर्मियों की स्थिति बताएं.
ओ! मैं अभी स्टार ट्रांसमीटर द्वारा रेसक्यू हैलीकॉप्टर से संपर्क करता हूं!
हीट सेंसेटिव यंत्र फिलहाल बेकार है ध्रुव! क्योंकि बर्फ में दबे होने के कारण बचावकर्मियों के शरीर गर्म से ठंडे हो चुके हैं!
ओ, तब तो एक ही तरीका है.
हमको 'मेटल डिटेक्टर' यानी धातु खोजक यंत्र की मदद से उनको ढूंढना होगा! एक ऐसा मिनी यंत्र मेरे पास है.
धातु खोजक यंत्र से हाड़-मांस के इंसान भला कैसे मिलेंगे ध्रुव?
ध्रुव की सोच सही है शीतनागकुमार! बचावकर्मियों के पास कई यंत्र धातु के होते हैं!
'मेटल डिटेक्टर' उन यंत्रों को ढूंढेगा!
और जहां पर वे धातुई यंत्र होंगे वहीं पर बचाव कर्मी भी होंगे!
दो जगहों से संकेत मिल रहे हैं नागराज! वहां से और यहां से! इन जगहों पर खोदते हैं!
जल्दी ही-
ओssss! थैंक्स! नागराज और ध्रुव! आज तो उल्टा हो गया! हम बचाने आए थे ध्रुव को, पर ध्रुव को हमें बचाना पड़ा!
कभी-कभी ऐसा भी होता है! चलो रेस शुरू करते हैं नागराज!
मैं अपनी जगह पर वापस पहुंचता हूं! तब तक भागना शुरू मत करना ध्रुव!

हमको तो लग रहा था कि हमें रेस यहीं पर समाप्त करनी पड़ेगी! लेकिन इतने खतरनाक हादसे के बाद भी हमारे सुपर हीरोज ने हिम्मत नहीं हारी है! रेस फिर से शुरू हो गई है!
वऊ ऽऽऽ
सुपर हीरोज हों तो ऐसे!
अब मुझको संभलकर चलना पड़ेगा, शीतनाग! पता नहीं कहां पर खतरा छिपा हुआ हो!
तुम इसकी चिन्ता मत करो नागराज!
यही तो आश्चर्य की बात है शीतनाग! अब मुझको उतनी ठंड नहीं लग रही है जितनी कि रेस शुरू होने से पहले लग रही थी! शायद इतनी एक्सरसाइज करने से मेरे बदन में गर्मी आ गई है!
यह तुमको ठंड न लगने का एक मात्र कारण नहीं है नागराज! मैं भी कुछ गर्मी महसूस कर रहा हूं! इस समय यहां का तापमान जितना होना चाहिए, उससे काफी ज्यादा है! पर कारण समझ में नहीं आ रहा है!
मैं तुम्हारे पैरों के नीचे की बर्फीली सतह को इतना पतला होने ही नहीं दूंगा कि वह टूट सके!
तुम तो बस भागते रहो! मैं तुम्हें शरीर की ठंड से भी बचाए रखूंगा!
ध्रुव का दिमाग तेजी से चल रहा था-
अब दो समस्याएं पैदा हो गई हैं! एक तो मुझको यह नहीं पता है कि बर्फ की सतह अब और कहां से टूट सकती है! और दूसरे मेरे पैर भी ठंड से सुन्न हो रहे हैं! अब रेस को जीतना तो दूर, रेस पूरी कर पाना ही मुश्किल लग रहा है!
इस समस्या का कोई हल निकालना पड़ेगा! मैं अपने प्रशंसकों को निराश नहीं कर सकता!

यस! मैं दोनों समस्याओं को एक साथ दूर कर सकता हूं! और ऐसा करने का तरीका भी साधारण सा है!
मुझे बस अपनी स्टार लाइन को इस चट्टान और उस चट्टान के बीच में अटकाना है!
और फिर मैं इस हवा में झूलती रस्सी पर चढ़कर यह रास्ता पार कर सकता हूं. अब मैं स्टार लाइन को आगे की चट्टानों में अटकाता जाऊंगा!
और फिर मुझे न तो अपने पैरों की चिन्ता करनी पड़ेगी, और नही बर्फीली सतह के टूटने की।
देखा, शीतनाग. ध्रुव का दिमाग भी कमाल का है! कितनी आसानी से उसने बर्फीली सतह के टूटने की समस्या को सुलझा लिया है!
और वह हमसे आगे निकल रहा है! जल्दी से कुछ सोचो नागराज; वर्ना वह समतल सतह पार करके हमसे पहले चढ़ाई की शुरूआत तक पहुंच जाएगा!
अब मैं क्या करूं? मैं भी सर्प रस्सी को चट्टानों से अटका सकता हूं, पर सर्प ठंड सहन नहीं कर पाएंगे, और मैं और ज्यादा लंबे कदम नहीं रख सकता।
या... रख सकता हूं!

ध्रुव, स्टार लाइन पर दौड़ लगा रहा था-
इस तरीके से मैं नागराज से पहले चढ़ाई की शुरुआत तक पहुंच जाऊंगा, और फिर... अरे!
वाह! नागराज ने तो कमाल का आइडिया सोचा है! अब तो वह भी मेरे साथ-साथ ही चढ़ाई की शुरुआत तक पहुंच जाएगा।
यह तरीका सोचा था नागराज ने-
वाह, नागराज! अब ध्रुव तुमको पीछे नहीं छोड़ पाएगा।
दोनों एक ही साथ चढ़ाई की शुरुआत पर पहुंचे थे-
ओफ्‌! मैं स्टार लाइन के सहारे आराम से चढ़ सकता था; लेकिन सारी स्टार लाइनें मैंने यहां तक पहुंचने में ही खत्म कर दी हैं। अब तो हाथों के सहारे ही चढ़ना पड़ेगा!
ये लंबी 'सर्पटांगें' अब किसी काम नहीं आएगी; सर्परस्सी भी ठंड के कारण बेकार है!
अब तो चट्टानें पकड़-पकड़कर ही चढ़ना पड़ेगा!

दोनों ने रेस का अंतिम चरण शुरू कर दिया-
अब ध्रुव तुमसे जीत नहीं पाएगा नागराज! क्योंकि मैं इस चढ़ाई पर बर्फ की एक सपाट ढलान बना दूंगा और तुम उस पर चिपककर चढ़ते हुए फटाफट ऊपर पहुंच जाओगे।
दर्शकों का रोमांच अपनी सीमाएं तोड़ रहा था-
नागराज एक नया 'आइस स्लोप' बनाकर उस पर चढ़ रहा है! यह तो चीटिंग है!
चीटिंग कैसे है? ध्रुव भी तो बर्फ पर न चलकर लाइन पर चला था, वह चीटिंग नहीं थी क्या?
झगड़ो मत यारो! दोनों ही सही कर रहे हैं! रूल्स के मुताबिक दोनों अपनी-अपनी पॉवर का यूज कर सकते हैं, और दोनों वही कर रहे हैं। इट्स फेयर।
रेस लगभग खत्म ही होने वाली थी! 'आइस स्लोप' पर तेजी से लहराता हुआ नागराज चोटी तक पहुंच गया था-
बस नागराज! अब तो तुम जीत गए! कुछ ही पलों में ये रेस खत्म हो जाएगी।

लेकिन सामने दिखती मंजिल एकाएक दूर होती चली गई-
ये क्या कर रहे हो नागराज? नीचे क्यों फिसल रहे हो? हमको तो और ऊपर जाना है! रेस की फिनिश तक!
तापमान बढ़ रहा है, और हम घट रहे हैं! अब हम ध्रुव के बराबर आ गए हैं!
ध्रुव कलाबाजी खाता हुआ चढ़ रहा है! कलाबाजी में मैं उसका मुकाबला नहीं कर सकता! कोई तरीका सोचना होगा!
मैं जानबूझकर नहीं फिसल रहा हूं शीतनाग! यह बर्फीला आइस स्लोप पिघल रहा है! और पानी पर मैं अपनी पकड़ बनाए नहीं रख सकता!
वातावरण और गर्म हो गया है नागराज, न जाने क्यों यहां का तापमान बढ़ रहा है!
पर्वतारोही ऐसी बर्फीली चट्टानों पर पकड़ बनाए रखने के लिए कांटेदार जूते यानी स्पाइक और कुदालियों का प्रयोग करते हैं!
मुझे भी तेजी से चढ़ने के लिए कांटेदार पकड़ चाहिए!
और कांटेदार पकड़ मुझको मिलेगी नागफनी सर्पों के कांटेदार शरीर से!
ओह! नागराज 'स्पाइक सर्पों' की मदद से तेजी से चढ़ रहा है, मुझे भी अपनी गति बढ़ानी होगी!

रेस का अंत आने वाला है! नागराज ध्रुव से आगे निकल चुका है! और अब ध्रुव के सामने एक लंबी और सीधी चढ़ाई है! ध्रुव के लिए इसको जल्दी चढ़ पाना लगभग असंभव है! अब यह तय है ये रेस नागराज ही जीतेगा! पर एक मिनट रुकिए! ध्रुव कुछ कर रहा है!
ओहो! ध्रुव बर्फीली सतह पर अपने स्टार ब्लेड्स छोड़ रहा है! स्टार ब्लेड्स बर्फ में धंस रहे हैं! और ध्रुव उन ब्लेड्स को पकड़ता हुआ और दूसरे ब्लेड्स को धंसाता हुआ सीधी चट्टान पर चढ़ता जा रहा है! अब फिर से ये कहना मुश्किल हो गया है कि ये रेस कौन जीतेगा!
ये तो 'फोटो फिनिश' का मामला लगता है! दोनों ही चोटी तक पहुंच चुके हैं!
और नागराज ने हाथ पहले आगे बढ़ाया है 'फिनिश प्वाइंट' पर लहराते झंडे के पकड़ने के लिए!
या यूं कहिए कि इस रेस में कोई नहीं हारा बल्कि दो लोग जीते हैं!
वी हैव ज्वाइंट विनर्स! नागराज एंड सुपर कमांडो ध्रुव.
और... और दूसरी तरफ से एक और हाथ ने आकर झंडे को पकड़ लिया है! दोनों ने एक साथ ही झंडे को पकड़ा है!
यानी इस रेस में न कोई जीता और न कोई हारा.
जो लोग कहते हैं कि चोटी पर सिर्फ कोई एक ही खड़ा रह सकता है वे गलत कहते हैं!
सहयोग से रहें तो चोटी पर पूरी दुनिया एक साथ खड़ी हो सकती है!

ये बात तो सही है!... अरे! नीचे की चट्टान हिल क्यों रही है?
बर्फ पिघल रही है ध्रुव! क्योंकि गर्मी एकाएक बढ़ गई है!
पर क्यों?
ऊपर देखो नागराज!
ऊपर एक दूसरा सूर्य चमक रहा है
ये उसी की गर्मी का नतीजा है!
समझा, ये कोई उल्का है, और जैसे-जैसे ये धरती के पास आती जा रही है...
...वैसे-वैसे बर्फ के पिघलने की गति भी बढ़ती जा रही है!
उल्का के गिरने की दिशा से ऐसा लग रहा है कि ये ठीक यहीं पर गिरने जा रही है, लेकिन अगर ये यहां से टकराई तो महाविनाश हो जाएगा, इसकी टक्कर से चट्टानों में जो कंपन पैदा होगा वह पूरे पहाड़ को तोड़कर रख देगा!
तुम्हारा कहना तो ठीक है, ध्रुव! लेकिन इस उल्का को रोकने के लिए हम कर भी क्या सकते हैं!
ये घाटी, जिसमें से हम रेस लगाकर यहां तक पहुंचे हैं! ये घाटी हमको बचा सकती है नागराज!
घाटी हमको कैसे बचाएगी ध्रुव?
ये घाटी दो किलोमीटर से ज्यादा गहरी है! उल्का की गर्मी से बर्फ वैसे ही पिघल रही है! अगर हम इस घाटी को पानी से भरकर झील का रूप दे सकें तो उल्का पानी में गिरेगी...

इससे उल्का ठंडी भी हो जाएगी और पानी इसकी चट्टानों से टकराने की गति को इतना कम भी कर देगा कि ये उल्का कुछ ज्यादा नुकसान न पहुंचा पाए।
ये तो समझे; लेकिन घाटी पानी से भरेगी कैसे?
सुनने में तो ये ठीक लगता है ध्रुव! लेकिन पता नहीं मैं ऐसा कर पाऊंगा या नहीं!
न जाने मेरे पास इतने ध्वंसक सर्प हैं भी या नहीं जो दो किलोमीटर गहरी घाटी को भरने लायक बर्फ पिघला सके।
आसपास की बर्फीली चट्टानों पर अपने ध्वंसक सर्प छोड़ो नागराज; ध्वंसक सर्प के धमाके बर्फ को तोड़ेंगे भी और कुछ बर्फ को पानी में भी बदल देंगे। बर्फ और पानी के मिले जुले मिश्रण से ये घाटी जल्दी भर जाएगी।
कोशिश करो नागराज; हमारे पास समय ज्यादा नहीं है!
नागराज ने कोशिश तो शुरू कर दी थी-
लेकिन वह जानता था कि देव कालजयी द्वारा वरदान में दिए गए विशेष नागफनी सर्प भी सीमित मात्रा में ध्वंसक सर्प पैदा कर सकते थे-
ध्वंसक सर्प बर्फीली चट्टानों को तोड़ने और पिघलाने लगे-
और उल्का पृथ्वी के और करीब आती चली गई-
दर्शकों की उत्तेजना अब घबराहट में बदल गई थी-
हे भगवान! नागराज और ध्रुव हेलीकॉप्टर द्वारा वहां से निकल क्यों नहीं जाते!
वे अपनी नहीं हमारी जानें बचाने के बारे में पहले सोचते हैं। इसीलिए वे वहां पर डटे हुए हैं!...
...और इसीलिए वे हमारे सुपर हीरोज हैं; हमारे रक्षक।

नागफनी सर्प, ध्वंसक सर्प पैदा करने के लिए नागराज के शरीर की ऊर्जा का ही प्रयोग कर रहे थे! और नागराज को हो रही कमजोरी का एहसास धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था-
आऽऽऽह! विशेष नागफनी सर्पों ने एक बार मुझे बताया था कि वे ध्वंसक सर्पों का उत्पादन सीमित मात्रा में ही कर सकते हैं! उस वक्त मैंने इसका कारण नहीं पूछा था, लेकिन आज मुझे पता चल रहा है, इसका कारण यह है कि ध्वंसक सर्प मेरे शरीर की ऊर्जा के प्रयोग से ही ध्वंसक सर्प पैदा करते हैं! अब मैं और ध्वंसक सर्प पैदा नहीं कर सकता! अब तो मुझमें खड़े रहने की तो क्या बैठ सकने तक की ताकत भी नहीं है!
हिम्मत मत हारो नागराज! अब तो उल्का भी इतनी पास आ चुकी है कि इसकी गर्मी भी बर्फ को पिघलाने में तुम्हारी मदद कर रही है! तुम इस वक्त हमारी एकमात्र उम्मीद हो नागराज!
मैं... मैं कोशिश करता हूं ध्रुव!
घाटी अब तक काफी हद तक पानी से भर चुकी थी

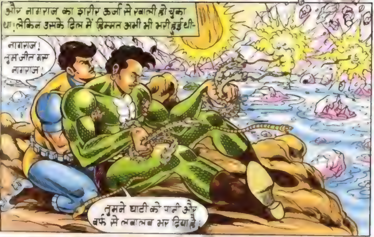
और नागराज का शरीर ऊर्जा से खाली हो चुका था। लेकिन उसके दिल में हिम्मत अभी भी भरी हुई थी-
नागराज! तुम जीत गए नागराज!
तुमने घाटी के पानी और बर्फ से लबालब भर दिया है!

अब देखना यह है कि तुम्हारी यह मेहनत कामयाब होती है या नहीं!
उल्का के टकराने के धमाके से पूरी पर्वत श्रृंखला थर-थरा उठी-
धड़ाक

चारों तरफ भाप के बादल छा गए-
और फिर पर्वतों में पैदा हुआ कंपन भी धीरे-धीरे शान्त होने लगा-
हम कामयाब रहे नागराज! पानी ने उल्का की गति को खत्म कर दिया है!
ध्रुव! वो देखो; भाप के बादलों में एक आकृति सी बनती लग रही है!
कुछ-कुछ ऐसा मुझे भी लग रहा है! लेकिन बादल कभी-कभी ऐसी शक्ल अख्तियार कर लेते हैं।
लेकिन अगले ही पल ध्रुव को अपना ख्याल बदलना पड़ा-
तुम दोनों ने मुझे रोकने की कोशिश तो अच्छी की, पर मुझे रोक पाना असंभव है! प्रकृत इस ग्रह पर एक नई सृष्टि बसाकर ही रहेगा!
ये बादलों की गर्जन है या ये आकृति बोल रही है?
पता नहीं ध्रुव! अब तो वह आकृतिनुमा बादल गायब हो चुका है! और अब कोई आवाज भी नहीं आ रही है!
कभी-कभी ऊंचाइयों पर ऑक्सीजन की कमी के कारण ऐसा भ्रम होता है नागराज! हमको भी कुछ ऐसा ही हुआ होगा!

नागराज और ध्रुव तो चिन्तित जरूर थे-
लेकिन पूरी दुनिया में खुशी की लहर दौड़ रही थी-
न तेरा हीरो ध्रुव हारा, और न ही मेरा हीरो नागराज!
दोनों ही हीरो ग्रेट हैं यार!
हम तो सिर्फ रेस देखने के लिए बैठे थे लेकिन नागराज और ध्रुव ने हमको साथ में अपना एक कारनामा भी दिखा दिया!
बस, मजा आ गया!
असली मजा तो तब आएगा जब दोनों हीरो 'स्वार्ड सेरेमनी' में एक साथ ट्रॉफी को पकड़ेंगे!
दोनों हैलीकॉप्टर में बैठकर समारोह स्थल के लिए जा चुके हैं,
'स्वार्ड सेरेमनी' के लिए महानगर को चुना गया था-
दोस्तो, मैं संयुक्त राष्ट्र की तरफ से नागराज और ध्रुव का धन्यवाद अदा करता हूं कि इन्होंने हमको एक अनोखी और रोमांचक प्रतियोगिता को देखने का मौका दिया।
और साथ ही साथ उन तमाम बेघर बच्चों की तरफ से भी इनका शुक्रिया अदा करता हूं, जिनका भविष्य इस प्रतियोगिता की स्पांसरशिप से मिले बीस मिलियन डॉलर की मदद से संवारा जाएगा!
अब दोनों विजेता हमारे विशेष मेहमान संयुक्त राष्ट्र के अध्यक्ष के हाथों ट्रॉफी ग्रहण करेंगे!

नागराज और ध्रुव के ट्राफी ग्रहण करते ही हॉल तालियों से गूंज उठा-
तालियों से सिर्फ हॉल ही नहीं-
पूरी दुनिया गूंज रही थी-
और महानगर का यह हिस्सा भी-
मैंने तो यह पूरा प्रोग्राम टेप कर लिया है, अब मैं अपने प्रिंटर पर इस रेस के पोस्टर निकालकर पूरे रूम में चिपकाऊंगी! खौं खौ.
तुझे खांसी कैसे हो गई? खौं खौं!
तुम भी खांस रही हो मम्मी! ...पर...एकाएक दम क्यों घुट रहा है मम्मी! चक्कर सा क्यों आ रहा है?
चक्कर तो मुझे भी आ रहा है! कुछ अजीब सी महक भी आ रही है.
नागराज की हजारों आंखों में से दो आंखें यह दृश्य देख रही थीं-
जासूस सर्प ने तेजी से मानसिक संकेत भेजने शुरू कर दिए-
और संकेत भेजते- भेजते-
जासूस सर्प का शरीर भी बेहोश होकर जमीन पर आ गिरा-
समारोह स्थल पर-
क्या बात है नागराज? तुम एकाएक परेशान क्यों हो गए?
जासूस सर्प संकेत भेज रहे थे ध्रुव!
खतरे के संकेत, और वे संकेत एकाएक आने बंद हो गए!

तब तो छानबीन करनी पड़ेगी!
चलो नागराज!
माफ कीजिए सर, लेकिन यू. एन. ओ. अध्यक्ष की उपस्थिति में आपका जाना असभ्यता होगी!
लेकिन हमको जाना ही होगा!
किसी की जान जाते हुए देखना और बड़ी असभ्यता होगी! हमें... खेद है!
और थोड़ी ही देर बाद-
यही वह जगह है, जहां से खतरे के संकेत आ रहे थे, ध्रुव!
जगह तो यही है. क्योंकि तुम्हारा सांप यहीं जमीन पर बेहोश पड़ा है!
और मुझे एकाएक चक्कर आ रहा है! यहां की हवा में कुछ है!
नाक में फिल्टर लगा लो ध्रुव! यहां की हवा में कुछ अजीब सी महक है!

इधर देखो ध्रुव! पेड़ों के बीच में एक मकान है! शायद उसमें कोई मुसीबत में फंसा हो!
ठीक है नागराज! तुम यहां छानबीन करो! मैं मकान का चक्कर लगाकर आता हूं!
नाक में फिल्टर लगा चुके ध्रुव ने-
जल्दी ही बेहोश माँ- बेटी को ढूंढ़ निकाला।
आप ठीक तो हैं न?
नहीं! अभी भी चक्कर आ रहे हैं, दम घुट रहा है!
पर... पर...
ये पेड़ कैसे उग आए? हमारे घर... के पास तो... दूर-दूर तक... कुछ भी नहीं... थाsss
ओ! ये तो फिर बेहोश हो गई! इनको मेडिकल मदद की जरूरत है।
एंबुलेंस बुलाने का समय नहीं है, नागराज! मैं इन दोनों को अस्पताल पहुंचाकर आता हूं! तब तक तुम यहां पर छानबीन करते रहो!
पर जरा संभलकर।
चिन्ता मत करो ध्रुव! यहां की वायु चाहे कितनी भी जहरीली हो पर मेरे जहरीले शरीर को नुकसान नहीं पहुंचा पाएगी।
हां, एक बात याद आई, बेहोश होते-होते इस महिला ने कहा था कि यहां पर इतने पेड़ कैसे उग आए!

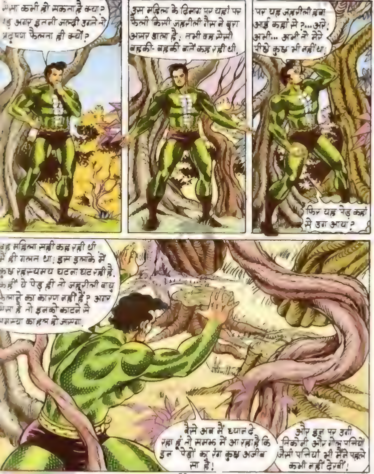
ऐसा कभी हो सकता है क्या? पेड़ अगर इतनी जल्दी उगते तो प्रदूषण फैलता ही क्यों?
उस महिला के दिमाग पर यहां पर फैली किसी जहरीली गैस ने बुरा असर डाला है; तभी वह ऐसी बहकी-बहकी बातें कह रही थी.
पर यह जहरीली हवा आई कहां से?...अरे! अभी... अभी तो मेरे पीछे कुछ भी नहीं था;
फिर यह पेड़ कहां से उग आया?
वह महिला सही कह रही थी मैं ही गलत था! इस इलाके में कुछ रहस्यमय घटना घट रही है. कहीं ये पेड़ ही तो जहरीली वायु फैलाने का कारण नहीं हैं? अगर ऐसा है तो इनको काटने से समस्या का हल हो जाएगा.
वैसे अब मैं ध्यान दे रहा हूं तो समझ में आ रहा है कि इन पेड़ों का रंग कुछ अजीब सा है!
और इन पर उगी तिकोनी और गोल पत्तियों जैसी पत्तियां भी मैंने पहले कभी नहीं देखीं!

आऽऽऽह्हा! मैं सही था! मुझे आभास हो रहा है कि वायु फिर से स्वच्छ हो रही है! वह अजीब सी महक धीरे-धीरे गायब हो रही है! यानी ये इन पेड़ों का ही काम था! ऐसा जरूर मिट्टी में किसी केमिकल के प्रदूषण के कारण हुआ होगा!
ये प्रदूषण नहीं है...
ये... ये आवाज तो जैसे जमीन के अंदर से आ रही है!
प्रदूषण वह होता है जो तुम मानवों द्वारा अपने आराम के सामानों को बनाने की होड़ में फैलाया जाता है!
आऽऽऽह!
हम तो इस ग्रह को साफ कर रहे हैं...
जमीन अपने आप ऊपर उठ रही है! एक आकार ग्रहण कर रही है!

हम इस ग्रह से प्रदूषण को भी साफ करेंगे और प्रदूषण फैलाने वाले प्राणियों को भी! हम नई प्रजातियां पैदा करेंगे इस ग्रह पर! जो तुम्हारी तरह उसी थाली में छेद न करें जिस थाली में वे खाएंगी!
ये... ये क्या बकवास कर रहे हो? कौन हो तुम?
और यह अधिकार तुमको किसने दिया कि तुम पृथ्वी के वातावरण से छेड़छाड़ करो?

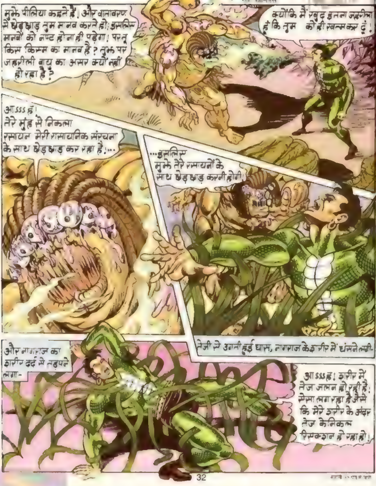
मुझे पीलिया कहते हैं, और वातावरण में छेड़छाड़ तुम मानव करते हो; इसलिए मानवों को नष्ट होना ही पड़ेगा! परन्तु किस किस्म का मानव है? तुम पर जहरीली वायु का असर क्यों नहीं हो रहा है?
क्योंकि मैं खुद इतना जहरीला हूं कि तुम को ही खत्म कर दूं!
आऽऽऽह! तेरे मुंह से निकला रसायन मेरी रासायनिक संरचना के साथ छेड़छाड़ कर रहा है!...
...इसलिए मुझे तेरे रसायनों के साथ छेड़छाड़ करनी होगी!
तेजी से उगती हुई घास, नागराज के शरीर में धंसने लगी-
और नागराज का शरीर दर्द से तड़पने लगा-
आऽऽह! शरीर में तेज जलन हो रही है! ऐसा लग रहा है जैसे कि मेरे शरीर के अंदर तेज केमिकल रिएक्शन हो रहा हो!

इच्छाधारी शक्ति... के लिए... मैं ...यान नहीं... लगा पा रहा हूं! आऽऽऽह! कमजोरी और जलन बढ़ती जा रही है!
हा हा! तू अपने... आपको जहरीला कहता है न! पर जहर भी तो एक रसायन ही होता है! मेरी घास के रसायन तेरे जहरीले रसायनों से प्रतिक्रिया करके तेरे जहर को निष्क्रिय कर रहे हैं!
और एक बार तेरा जहरीलापन खत्म होते ही, मेरी जहरीली वायु तुझे खत्म कर देगी!
ऐसा नहीं होगा.
घास के पत्ते स्टार ब्लेड से कट रहे हैं! यानी...
...ध्रुव वापस आ गया है.
हां, नागराज, और अस्पताल वालों से मैं ये 'वायु विश्लेषक' भी ले आया हूं. और ये यहां की हवा की जांच करके यह बता रहा है कि यहां की हवा में 'सल्फर डाइ ऑक्साइड' यानी SO_2 फैल रही है!
सही समझे हो तुम! जैसे तुम्हारे पौधे रात को ऑक्सीजन खींचकर कार्बन डाइ ऑक्साइड छोड़ते हैं, वैसे ही मेरे द्वारा उगाए गए पौधे दिन को ऑक्सीजन खींचकर जहरीली SO_2 छोड़ते हैं!
ये वीरान इलाका मैंने इसीलिए चुना था ताकि यहां पर मेरे पेड़ों का ऐसा जंगल खड़ा हो जाए जो सारे शहर की हवा को दूषित करके मानवों को मार डाले.
और फिर ये पेड़ बढ़ते जाएं और सारी पृथ्वी की हवा को ही बदल डालें.
सारे मानव मारे जाएं और फिर हम पृथ्वी पर नए जीवों को पैदा कर सकें!

लेकिन तुम हमारा विनाश करना क्यों चाहते हो ?
कारण साधारण है! तुम मानवों को एक साफ सुथरी, हवा पानी और हरियाली से युक्त पृथ्वी सौंपी गई थी! यही चीजें तुम्हारे जीवन का आधार हैं! लेकिन फिर भी तुमने पूरे वातावरण को गंदा कर दिया! विकास के नाम पर प्रदूषण फैलाया!
आज पृथ्वी पर फैली हरियाली, सौ साल पहले के मुकाबले, आधी भी नहीं रह गई है!
पृथ्वी की जीवन रक्षक ओजोन पर्त में प्रदूषण ने एक बड़ा छेद कर दिया है!
धरती के कई हिस्से के वातावरण पर धूल और धुएं के प्रदूषण की कई किलोमीटर मोटी पर्त चढ़ गई है!
सूर्य की जीवनदायी किरणें, पृथ्वी की सतह तक पहुंच ही नहीं पा रही हैं! और इससे प्रकृति मर रही है! प्रकृ को मारने वाले हैं मानव!
और प्रकृति को मर पाने से पहले हम तुमको मार देंगे!
आऽऽऽह! इन विस्फोटकों से भी सल्फर की गैसें निकल रही हैं! ये सल्फर की ही मदद से अपने सारे काम कर रहा है! और सल्फर हमारे लिए घातक है!
ओह! अब जमीन से सल्फर युक्त पानी के गर्म फव्वारे छूट रहे हैं! शायद हमको जिन्दा उबालने के लिए!
समझदार है तू! पृथ्वी पर वर्तमान जीवन कार्बन तत्त्व पर आधारित है! हम सल्फर तत्त्व पर आधारित नया जीवन पैदा करेंगे!... नए जीव पैदा करेंगे!
नहीं नागराज, ये जानता है कि हम इन फव्वारों से आराम से बच सकते हैं.
ये फव्वारे सल्फर युक्त के गर्म कण हवा फैला रहे हैं!

और ये बूंदें, विस्फोटों के कारण बनी सल्फर गैसों के साथ मिल-कर हवा में मौजूद सूक्ष्म जीवाणुओं पर आश्चर्यजनक असर कर रही हैं।
ये हवा में पहले से मौजूद जीव नहीं हैं! ये जीव तो मेरे रसायनों ने अभी-अभी पैदा किए हैं।
हा हा हा! ये ही वे नए जीव हैं, जिनका जीवन सल्फर पर आधारित है! और इनका भोजन जानते हो क्या है?
इनका भोजन हैं कार्बन तत्त्व पर आधारित जीव! यानी तुम।
और तुम्हारे जैसे दूसरे मानव।
इन सैकड़ों जीवों को हम मार नहीं सकते, नागराज इनको मारने का सबसे सीधा तरीका इनको पैदा करने वाले पीलिया को नष्ट करना है।
इसके मरते ही ये जीवाणु अपने आप ही नष्ट हो जाने चाहिए।
मैं कोशिश तो कर रहा हूं ध्रुव! लेकिन इसके मिट्टी के दलदली शरीर पर कोई भी वार काम नहीं कर रहा है!

इस पर कुछ भी असर नहीं कर रहा है! और ये जीवाणु तादाद में बढ़ते जा रहे हैं!
थोड़ी ही देर में ये आबादी की तरफ बढ़ना शुरू कर देंगे।
तब तो गजब हो जाएगा ध्रुव ये मुझको काटने के बाद भी गल नहीं रहे हैं। शायद इन पर हमारे हथियार भी असर न करें!
इन जीवाणुओं को नष्ट तो करना ही पड़ेगा नागराज, अगर हम पीलिया को नष्ट नहीं कर पा रहे हैं तो कोई और तरीका सोचना पड़ेगा.
और कौन सा तरीका है ध्रुव?
शीतनागकुमार की शीत किरणों ने पलक झपकते ही फव्वारों को जमा दिया-
ओह! तुमने जल का रूप बदल कर उसे तरल से ठोस बना दिया ऐसा होने से प्रतिक्रिया रुक गई है! लेकिन इन जीवाणुओं से कैसे बचोगे जो पहले से ही पैदा हो चुके हैं.
ये गर्म पानी के फव्वारे! यही वायु में मौजूद गैस से प्रतिक्रिया करके इन जीवाणुओं को पैदा कर रहे हैं!
अगर ये फव्वारे खत्म हो जाएं तो जीवाणु भी बनने बंद हो जाएंगे!
मैं समझ गया ध्रुव! शीतनाग कुमार!
हम इनको नष्ट करने का रास्ता भी ढूंढ ही लेंगे पीलिया!
इनको नष्ट करने का रास्ता तो आसान सा है ध्रुव,

पीलिया ने खुद ही बताया था कि इन जीवाणुओं का भोजन हम हैं! अगर ये हमको खा न सकें तो भूख से तड़प-तड़पकर खुद ही खत्म हो जाएंगे!
नए-नए पैदा हुए प्राणियों को तो वैसे भी ज्यादा भूख लगती है! क्योंकि उनको ज्यादा ऊर्जा की जरूरत होती है।
आइडिया अच्छा तो है, लेकिन ये आसान सिर्फ तुम्हारे लिए होगा! क्योंकि तुम तो गायब होकर बच सकते हो!
मैं क्या करूं, ये भी तो बताओ?
कलाबाजी खाते रहो!
ध्रुव और नागराज ने सल्फर प्राणियों के दांतों को अपनी खाल तक नहीं पहुंचने दिया-
अब उनसे निपटना बच्चों का खेल था-
अब इनके शरीरों में हमारे वारों को सहने की ताकत नहीं बची है ध्रुव!
तुम मानवों ने पीलिया के दो वारों को विफल कर दिया! यकीन नहीं होता! लेकिन अब मैं तुम दोनों को ऐसा कर पाने का मौका ही नहीं दूंगा!
और सल्फर प्राणियों की भूख, खुद उनको ही खाने लगी! उनकी ऊर्जा तेजी से खत्म होने लगी-
सल्फर युक्त मिट्टी का खोल दोनों को तेजी से ढकने लगा-

आऽऽऽ ह! ये मिट्टी का खोल जितनी तेजी से हमको ढक रहा है, उतनी ही तेजी से कड़ा भी होता जा रहा है! इसकी मिट्टी काफी तेजी से सूख रही है!
मेरी सर्प शक्तियां इस खोल के बाहर नहीं निकल सकतीं! और इस मिट्टी में मौजूद सल्फर मेरे शरीर की शक्ति को सोख रहा है।
अरे! ये टक-टक की आवाज! मैं समझ गया। खोल सूखने के बाद उंगली हिला सकने की जगह बची है! ध्रुव उसी जगह का इस्तेमाल करके 'मोर्स कोड' में मुझसे बात कर रहा है!
इधर एक योजना बन रही थी-
यही हाल ध्रुव का भी होगा!
लेकिन अब हल कोई योजना बनाने के लिए आपस में बात भी नहीं कर सकते।
लेकिन तुम दोनों यह दृश्य नहीं देख पाओगे। क्योंकि तुम दोनों तब तक मर चुके होगे। अरे, लगता है कि एक मानव तो गया।...
... वह गिर रहा है।
और उधर दूसरी तरफ-
हा हा हा। मैंने झरने के पानी को फिर से तरल बना दिया है! कुछ ही देर में ये पानी फिर से प्रतिक्रिया को शुरू कर देगा और 'सल्फर जीव' पैदा होने लगेंगे।
उसने गिरते-गिरते दूसरे मानव को भी गिरा दिया है!
और वह दूसरा मानव झरने में गिर रहा है!

झरने के गर्म पानी ने पलक झपकते ही ध्रुव पर चढ़े मिट्टी के खोल को धो डाला-
और अगले ही पल ध्रुव ने नागराज को भी आजाद करा दिया-
आऽऽऽह! थैंक्स ध्रुव, तुम्हारी भी योजना अच्छी थी...
लेकिन तुमको यह नहीं पता कि खोल में बंद होने के बाद गिरना कितना मुश्किल होता है.
पता है. मैं खुद नहीं गिर पा रहा था इसी-लिए तो तुमसे कहा था!
यह योजना अच्छी नहीं, बल्कि तुम दोनों की मेहनत के लिए खराब थी!
ओह! मिट्टी हमारे पैरों से लिपटकर ऊपर चढ़ रही है! अब तो हम जमीन पर खड़े भी नहीं हो सकते!
मैं समझ गया नागराज, पीलिया से निपटने का तरीका! इसकी शक्ति 'सल्फर' तत्त्व है!
लेकिन ये सल्फर तत्त्व बना नहीं सकता.
ये सल्फर तत्त्व धरती से खींच रहा है! इसका संपर्क अगर धरती से काट दिया जाए तो इसकी शक्ति भी खत्म हो जानी चाहिए!
पर इसका संपर्क धरती से काटें कैसे?
सुनो, नागराज!
अगले ही पल- पीलिया के पैर धरती से उखड़ गए-
आऽऽऽह!
आऽऽऽह! तेरी ये हिम्मत कि तू मुझ पर हमला करे!
शरीर जल जाएगा तेरा!

पीलिया गिरा तो जरूर, लेकिन जमीन पर नहीं-
ये... ये जमीन एकाएक गुदगुदी कैसे हो गई?
धप्प
तू जमीन पर नहीं, 'सर्प गद्दे' पर बैठा है! ये 'सर्प गद्दा' जमीन से तेरा संपर्क काट देगा! और फिर तू धरती से 'सल्फर तत्त्व' को खींच नहीं पाएगा।
इस सर्प गद्दे को मेरे शरीर में मौजूद सल्फर तत्त्व थोड़ी देर में जला डालेगा!
मेरे पास गद्दे बनाने के लिए ढेर सारे सर्प मौजूद हैं! मैं सर्प-गद्दा बनाता जाऊंगा, और तू 'सर्प-गद्दे' को गलाने के लिए अपने सल्फर तत्त्व को नष्ट करता जाएगा...
और इस बीच मैं खूब तेरी पिटाई करके तेरी ताकत को और कम करता जाएगा।
धाड़
कड़ाक
ये सल्फर तत्त्व की मदद से ही अपने मिट्टी के शरीर को जोड़े हुए था। अब इसका शरीर टूटना शुरू हो गया है! यानी हमारी योजना काम कर रही है नागराज!

आऽऽऽह! आऽऽऽह! मैं असफल हो गया; मानव सचमुच बहुत चतुर प्राणी है; मुझे नष्ट कर दिया है उसने।
कड़ड़ड़ाक
टनाक
ठड़ाक
रीलिय खत्म हो गया है ध्रुव;
लेकिन हमको यह नहीं पता चल पाया कि ऐसा ये क्यों कर रहा था?

इससे हमको वैसे भी कुछ पता नहीं चलता नागराज! मुझे पूरा यकीन है कि ये किसी के द्वारा भेजा गया प्राणी था!
वह किसी के आदेश पर ये काम कर रहा था!
ठीक समझा तुमने मैंने भेजा था इसे; मानवो!
धूल का गुबार उठ रहा है ध्रुव, और उसमें वही चेहरा नजर आ रहा है!...
... जो हमको पहाड़ों पर उठी भाप में नजर आया था!... प्रकृत का चेहरा!
हां, मैं प्रकृत हूं! और आज के बाद तुम दोनों मेरे किसी भी काम में अड़ंगा नहीं डाल पाओगे,
क्योंकि तुम दोनों धरती पर रहोगे ही नहीं! अंतरिक्ष में अनंतकाल तक तैरती रहेंगी तुम दोनों की लाशें;
पलक झपकते ही वह बवंडर नागराज और ध्रुव को वातावरण की सीमा के पार अंतरिक्ष में पहुंचा चुका था-

नागराज और ध्रुव को वातावरण की सीमा पर छोड़कर, बवंडर फिर से नीचे गोता लगा गया-
और ध्रुव तथा नागराज का दिमाग अंधेरे में डूबने लगा-
मौत के अंधेरे में-
और इस बार मौत के अंधेरे को जीवन के उजाले में बदलने के लिए न तो नागराज कुछ कर सकता था, और न ही ध्रुव-
हम कहां हैं ? ये कौन सी दुनिया है ?
अब तो दोनों की आंखें शायद किसी दूसरी दुनिया में ही खुलनी थीं-
और हमको बचाया किसने ? आप कौन हैं ?

घबराओ मत : तुम किसी और दुनिया में नहीं हो, ये पृथ्वी ही है! और तुम दोनों जिन्दा हो, और सही-सलामत हो!
मैं कौन हूं ये जानना जरूरी नहीं है! जरूरी तुम दोनों को जिन्दा बचाना था, और वह काम भगवान की कृपा से मैंने कर दिया है.
आपने हमको बचाया! पर कैसे? हम... हम तो अंतरिक्ष में तैर रहे थे. मौत हमसे एक पल की दूरी पर थी! फिर आप हम तक पहुंची कब और हमको बचाया कैसे?
तुम फिर से बेकार सवाल पूछ रहे हो. सवाल ये होना चाहिए था कि मैंने तुम दोनों को क्यों बचाया? बचाना तो वैसे भी मेरा फर्ज था लेकिन फिलहाल मुझे तुम दोनों की मदद चाहिए! प्रकृति के खिलाफ लड़ने के लिए.

प्रकृत : यानी वही जिसका चेहरा हमको जगह-जगह पर नजर आता रहता है. उसको आप कैसे जानती हैं? और वह चाहता क्या है?
मैं प्रकृत को वर्षों से जानती हूं: वह पृथ्वी की जलवायु बदलना चाहता है! पृथ्वी पर खनिज तत्वों के नए-नए संयोग बनाकर नई प्रकार की प्रजातियां पैदा करना चाहता है वह!
पर क्यों? वह ऐसा क्यों करना चाहता है?
क्योंकि यही उसका काम है! वह नए-नए ग्रहों को ढूंढकर वहां पर मौजूद तत्वों को विश्लेषण करता है और फिर उन तत्वों के मेल से रसायनों को बनाकर उस ग्रह पर ऐसे जीवों की उत्पत्ति करता है जो उन रसायनों पर आधारित हों!
जैसे पानी एक रसायन है और पृथ्वी का जीवन पानी पर ही आधारित है!
लेकिन पृथ्वी पर तो पहले से ही जीवन है! फिर प्रकृत यहां पर नए प्रकार का जीवन क्यों पैदा करना चाहता है?
वह ये समझ रहा है के पृथ्वी पर मौजूद वर्तमान जीव मानव पृथ्वी के खनिज तत्वों को भी नष्ट कर रहा है और उसकी मदद से प्रकृति को भी खत्म कर रहा है
इसीलिए वह ऐसे जीव बनाना चाहता है जो प्रकृत के साथ मिलकर चलें! प्रकृति को विकसित करें.
उसका सोचना एक हद तक सही है! लेकिन ऐसा होने से अरबों खरबों प्राणी मौत के मुंह में समा जाएंगे!
हम ऐसा होने नहीं दे सकते!
मेरा भी यही मानना है!
इसीलिए मैं प्रकृत को रोकना चाहती हूं. और अभी तुमने जिस प्रकार से पीलिया का सामना करके उसको मात दे दी उससे मैंने यही निष्कर्ष निकाला है कि प्रकृत को रोकने में तुम दोनों मेरी मदद कर सकते हो?
हम तैयार हैं! मानवता को बचाने के लिए हम अपनी जान भी दे सकते हैं. हमको करना क्या होगा?

फिलहाल जो कुछ करना है वह मुझे करना है। प्रकृत का पता लगाना है। वह अब और इंतजार नहीं करेगा। वह कोई ऐसा वार करेगा जो प्रकृति के चक्कर को ही बदल दे. ओफ़.
मुझे उसका पता लगाने में वक्त लग रहा है. आखिर कहां मिलेगा मुझको प्रकृत ?
प्रकृत हमको समुद्र के किसी कोने में मिलेगा।
शाबाश ! पृथ्वी ने मानवों का विकास करके कोई गलती नहीं की है! तुम लोग थोड़े शरारती जरूर हो, पर हो समझदार! अब मैं प्रकृत को ढूंढती हूं.
एक मिनट! प्रकृत ने पहले उन रसायनों को बनाया है जिन रसायनों पर जीवन आधारित होता है. पृथ्वी पर वह रसायन जल है!
प्रकृत हमको मारने के लिए पहले जल का स्वरूप बदलेगा. और पृथ्वी पर जल के भंडार हैं... समुद्र.
प्रकृत ने पहले ही अपना काम शुरू कर दिया था-
आज मौसम बहुत बढ़िया है. समुद्र में तैरने के लिए इससे बढ़िया दिन तो हो ही नहीं सकता.
सच कहा यार।
आऽऽऽह. मेरा बदन जल रहा है!
मेरी चमड़ी उतर रही है.
ओ माई गॉड! समुद्र का रंग बदल गया है! कुछ मिल गया है समुद्र में
भागो! ये पॉल्यूशन का नतीजा है!
जो बच निकले, वे भाग्यवान थे-
पर कुछ अभागे भी थे जो बच नहीं सके-

प्रकृत ने अपना खतरनाक खेल शुरू कर दिया था-
हा हा हा! मैंने पृथ्वी पर जीवन देने वाले जल को खतरनाक विष में बदलना शुरू कर दिया है, अब ये विष धीरे- धीरे पूरी धरती में फैलेगा! और कुछ ही समय बाद लोगों को पीने के लिए पानी नहीं विष मिलेगा,
जीवनदायी जल के स्थान पर मौत देने वाला विष!
जल का स्वरूप तो बदलना शुरू हो गया है...
... अब वायु का स्वरूप बदलना होगा। जल और वायु बदलते ही पृथ्वी पर का वर्तमान जीवन कुछ ही घंटों में नष्ट हो जाएगा.
नहीं, रुक जाओ प्रकृत! तुमको पृथ्वी की जलवायु बदलने का कोई अधिकार नहीं है!
ओ! तो तुम आ ही गई! मैं भी यही सोच रहा था कि तुम अभी तक आई क्यों नहीं! लेकिन अधिकार की बात तुम्हारे मुंह से अच्छी नहीं लगती!
पृथ्वी पर जीवन बसाने की जिम्मेदारी तुमको दी गई थी प्रकृति! पृथ्वी शरीर था और तुम उसकी जान लेकिन ये कैसा जीवन पैदा किया तुमने! ऐसा जीवन जो तुम्हारी ही जान का दुश्मन बन गया है!
तुमने गलती की है प्रकृति! और इस गलती को सुधारने का मुझे पूरा-पूरा हक है!
प्रकृति! यानी... यानी आप प्रकृति हैं!

हमको जीवन देने वाली प्रकृति, धरती मां का जीवित रूप, तभी तो मैं कहूं कि पानी में मछलियों की तरह सांस ले सकने की शक्ति मुझे आप कैसे दे सकती हैं.
हमने... यानी मानवों ने आपको इतने कष्ट पहुंचाए लेकिन फिर भी आप हमको नष्ट होने से बचा रही हैं.
तब कहीं जाकर मानव अपने वर्तमान स्वरूप में आ पाया है. अभी चाहे तुम गलतियां कर रहे हो, लेकिन मुझे यकीन है कि तुम गलतियों से सीख लोगे और मेरे सारे घाव भर दोगे.
वह समय जरूर आएगा, मैं प्रकृति को तुम्हें नष्ट नहीं करने दूंगी.
बच्चे अपनी शरारतों से मां को चाहे कितना भी कष्ट दे लें, लेकिन फिर भी मां उनके शरीर पर लगी खरोंच को बर्दाश्त नहीं कर सकती!
मैंने भी लाखों वर्षों की मेहनत के बाद तुमको बनाया है इसके लिए मुझे न जाने कितनी मुश्किलों से गुजरना पड़ा.
अपने कर्तव्यों से तुम्हें विमुख नहीं है, और अपने भाई से झगड़ा कर रही है.
तू भी कमाल है बहन, लेकिन अब तू कुछ भी नहीं कर सकती.
वो देख! ये है मेरी सृष्टि, विषकुंभी! ये जल में तत्त्वों का मिश्रण करके जहरीला रसायन बना रही है. और इस तक मेरी सृष्टि का जो भी प्राणी पहुंचने की कोशिश करेगा वह गल जाएगा, क्योंकि विषकुंभी चारों तरफ से अपने ही विष से घिरी हुई है!
इनको तू रोक नहीं सकती.
वैसे भी मेरे ऐसा करने से तू और भी कमजोर होती जाएगी.
जा, किसी और ग्रह पर जाकर अपनी सृष्टि को फैला प्रकृति!
क्योंकि अब मैं हवा को भी बदलने जा रहा हूं! उसके बाद तो तू वैसे भी अधमरी हो जाएगी.

हमारे कारण प्रकृति इतनी कमजोर हो गई है कि वह प्रकूत के वारों को न तो सह पा रही है और न ही रोक पा रही है! और प्रकूत द्वारा फैलाए गए रसायन उसको और कमजोर बना रहे हैं, हमको अपनी गलती सुधारने का यह मौका मिला है; हमको प्रकृति को बचाना होगा!
एक ही रास्ता है! तुम प्रकृति के साथ जाकर प्रकूत को वायु दूषित करने से रोको, और मैं यहां पर समुद्र में फैलते विष को रोकने का प्रयत्न करता हूं!
उम्मीद है कि ये विष मेरे जहरीले शरीर को नहीं गला पाएगा.
प्रकृति ने अभी और कमजोर होगी ध्रुव! क्योंकि प्रकूत पानी के बाद अब हवा को भी दूषित करने गया है.
लेकिन जरा संभल कर नागराज! प्रकूत की सृष्टि को नष्ट करना लगभग असंभव है!
वैसे मैंने अब अपने आपको संभाल लिया है. मैं प्रकूत को रोकने का पूरा प्रयत्न करूंगी. आओ ध्रुव!
प्रकूत अपना काम बहुत तेजी से कर रहा था-
वायु का स्वरूप बदलने का प्रयास मैं एक बार कर चुका हूं! और उसमें असफल भी हो चुका हूं! इस बार मानवों पर ऐसा वार होना चाहिए कि उनको पलटकर वार करने का मौका ही न मिले!

महानगरवासी इस एकाएक आई मुसीबत से चौंक उठे-
महानगर की एक फैक्ट्री में-
अरे! बिजलियां कैसे गिर रही हैं! सफेद बादलों से बिजली गिरना न तो पहले कभी सुना है और न देखा है!
ये मामूली बिजलियां नहीं हैं मेरी कार पर बिजली गिरते ही पूरी कार हवा में गायब हो गई है।
सिर्फ कार ही नहीं, ये बिजलियां तो लोहे की हर चीज को गायब कर रही हैं, प्लांट के कई हिस्से भाप बनकर हवा में उड़ रहे हैं!

पूरे महानगर में त्राहि- त्राहि मच गई थी-
इस मुसीबत से हमको सिर्फ नागराज बचा सकता है।
पर वह है कहां ? हमको बचाने के लिए आता क्यों नहीं ?
नागराज, जमीन पर था ही नहीं-
यहीं से जल की सीमा समाप्त हो रही है, और विष की सीमा शुरू हो रही है। ...
... विष को समाप्त करने के लिए जल को विष में बदलने वाले जीव विषकुंभ को खत्म करना होगा, और उसके लिए मुझे जल की सीमा पार करके विष के सागर में घुसना पड़ेगा।
और ये विष न जाने मेरा क्या हाल करेगा?
अरे वाह! मुझे तो कुछ भी नहीं हुआ!
शायद मेरे खुद जहरीला होने के कारण प्रकृत द्वारा बनाया जा रहा विष मुझ पर असर नहीं कर रहा है, सिर्फ मेरा सिर थोड़ा सा चकरा रहा है। जैसे-जैसे मैं इस विष का आदी होऊंगा, ये चक्कर भी खत्म हो जाएंगे।

पानी के बदलने का असर स्वर्ण नगरी तक जा पहुंचा था-
एकाएक घुटन सी क्यों हो रही है ? क्या समुद्र के पानी को ऑक्सीजन में बदलने वाला हमारा यंत्र खराब हो रहा है?
संयंत्र एकदम ठीक है! समुद्र के पानी में से ही ऑक्सीजन खत्म हो गई है! पानी का स्वरूप ही बदल गया है!
पानी अब हमारे लिए जहर बन गया है.
पानी जहर बन रहा है.
अब हम नहीं बचेंगे.
हमको उस चीज को खत्म करना होगा जो जल को विष में बदल रही है! आखिर ऐसी चीज है कौन सी?
वो देखो, वह प्राणी जल को विष में बदल रहा है!
हमको इस प्राणी को रोकना होगा! किसी भी कीमत पर!

नागराज अब तक अपनी स्थिति को समझ गया था-
ओह! मेरा शरीर भी जहरीला होने के कारण विष मुझे मार नहीं पाया, तो उसने मेरे शरीर की संरचना को ही बदल दिया है.
अब मैं जो भी जल मांस के रूप में अंदर ले रहा हूं वह प्रकृतक विष बनकर बाहर निकल रहा है!
और स्वर्ण नगरी वासी मुझे भी विषकुंभी का साथी समझ रहे हैं!
लेकिन फिलहाल इनके हथियार मेरे लिए कोई खतरा नहीं खड़ा कर सकते क्योंकि विषैले सागर में इनकी घातक ऊर्जा तक बेअसर साबित हो रही है!
लेकिन मेरे पास विषकुंभी को खत्म करने के लिए वक्त बहुत कम है, क्योंकि जल्दी ही ये विषैला सागर स्वर्ण नगरी और इसके वासियों को घेर कर गला डालेगा, और उनके पास बच निकलने का कोई रास्ता नहीं बचेगा।
विष फैलाने वाले प्राणी एक नहीं दो हैं धनंजय, और अब वे आपस में ही भिड़ रहे हैं! अब हम क्या करें?
इंतजार करने के अलावा और कोई चारा नहीं है, विरम. जिस विष में हमारे हथियार गल रहे हों उस विष में हम भी गल जायेंगे!
हम 'फोर्स फील्ड' के कवच में कहीं पर भी सुरक्षित रह सकते हैं; और हमारे पास ऑक्सीजन भी ज्यादा नहीं बची है धनंजय.
पहले इन दोनों में से एक, दूसरे को मार दे, फिर हम बचे हुए प्राणी से निपटेंगे!

इसी वक्त महानगर में-
प्रकृत का पता मिल गया है ध्रुव! वह वायुमंडल में धातु के कण मिलाकर उसे दूषित कर रहा है!
लेकिन असली मुसीबत तो उसकी गिरती बिजलियां ला रही हैं, वैसे हम तो गिरती बिजली को लोहे के छड़ों के माध्यम से रोकते हैं, लेकिन ये बिजलियां तो लोहे को ही भाप बना दे रही हैं.
ये मत भूलो ध्रुव कि वे लोहे के तड़ित चालक बिजली को मेरे ही शरीर यानी पृथ्वी के अंदर पहुंचाकर नष्ट कर देते हैं!
अब मैं इन बिजलियों को सीधे अपने ही अंदर खींच लूंगी. इधर-उधर गिरने ही नहीं दूंगी.
महानगरवासियों को उस आश्चर्यजनक नजारे ने गिरती बिजलियों से निजात दिला दी-
कमाल है. जमीन अपने आप ऊपर उठकर गिरती बिजलियों से टकरा रही है!
हां! और बिजलियां बगैर किसी चीज को नुकसान पहुंचाए जमीन में समाती जा रही हैं! हम बच गए!
प्रकृति की सृष्टि तो बिजलियों से बच गई थी! लेकिन खुद प्रकृति नहीं बच पाई थी-
ये... ये आपको क्या हो रहा है?
मैं प्रकृत की बिजलियों को संभाल नहीं पा रही हूं!
न जाने क्यों ये बिजलियां मुझे शॉक दे रही हैं.

कुछ ऐसा है जिसको मैं समझ नहीं पा रही हूं! प्रकृत की शक्तियां एकाएक बहुत तीव्र हो गई हैं. जो काम करने में मुझे लाखों वर्ष लगे उसको वह कुछ ही पलों में कैसे कर ले रहा है? मैं तो जीवों को धीरे-धीरे उन्नत कर पाई थी! परन्तु प्रकृत तो पलक झपकते ही ऐसे प्राणियों को पैदा कर ले रहा है जो पृथ्वी की रासायनिक संरचना को तेजी से बदलने की क्षमता रखते हैं.
ये बाद में सोचिए! पहले तो इन बिजलियों को रोकिए. वर्ना बचाने के लिए कुछ बचेगा ही नहीं.
प्रकृत की हर शक्ति मुझे कमजोर करती जा रही है! मुझे भ्रमित कर दिया है प्रकृत ने. शक्तियां तो अभी भी मेरे पास बहुत हैं. लेकिन मैं ये निर्णय नहीं ले पा रही हूं कि उनका प्रयोग कैसे करूं! किस शक्ति का प्रयोग करूं मैं इन बिजलियों को रोकने के लिए?
एक और रास्ता है. आप सृष्टि जरूर रचती हैं, लेकिन आपके लिए भी सृष्टि रचने के कुछ नियम हैं. विज्ञान के नियम!
प्रकाश, ध्वनि, विद्युत, गुरुत्वाकर्षण, तत्वों के बीच में रासायनिक प्रतिक्रिया के नियम.
तुम्हारा दिमाग सचमुच तेज है! बिल्कुल ठीक सोचा है तुमने.
लेकिन विज्ञान के नियम हमको रास्ता कैसे दिखाएंगे?
बादलों की बिजलियां पृथ्वी पर आकर्षण के कारण गिरती हैं। क्योंकि पृथ्वी और बादलों में विपरीत आवेश यानी इलेक्ट्रिक चार्ज होते हैं.
अगर पृथ्वी और बादलों में एक ही प्रकार का आवेश हो तो...
...तो बादलों और पृथ्वी के बीच का आकर्षण, प्रतिकर्षण में बदल जाएगा और बिजलियां बादलों में ही रह जाएंगी!
ऐसा ही करना चाहिए! मैं पृथ्वी पर का इलेक्ट्रिक चार्ज बदल देती हूं!
उम्मीद करो कि प्रकृत हमारी चाल को समझ न पाए!

ये... ये क्या? बिजलियां पृथ्वी पर गिर क्यों नहीं रही हैं?
पृथ्वी पर का आवेश बदलते ही बिजलियां, बादलों में ही सिमटकर रह गईं-
और बिजलियों के लगातार बढ़ते चार्ज को प्रकूत संभाल नहीं पाया-
बादल एक गड़गड़ाहट के साथ फट गया-
गड़ड़ड़ड़
कहो प्रकूत, कैसी रही?
चाल तो अच्छी थी, बहन, तेरी सोच की मैं दाद देता हूं! लेकिन तू फिर भी हार गई!
क्योंकि मेरा काम तो लगभग पूरा हो चुका है! अब वातावरण में लोहे के इतने कण जमा हो चुके हैं...
...कि मैं उनके बादल बनकर...

... महानगर पर लोहे की बूंदे बरसा सकता हूं.
बस यूं समझ लो कि अब महानगर पर लाखों-लाख गोलियां एक साथ दागेंगी
न इंसान बचेंगे न पशु-पक्षी और न ही तेरी मिट्टी से बनी इमारतें.
ओह, तो इसलिए प्रकृत बिजलियों से लोहे का भाप बनाकर उनको हवा में उड़ा रहा था!
कुछ करिए प्रकृति वर्ना प्रकृत के यह वार कुछ ही मिनटों में महानगर को धूल में मिला देगा;
और जमीन को लाशों से भर देगा!
महानगर पर खतरे के बादल मंडरा रहे थे-

लेकिन महानगर का रक्षक इस वक्त पूरे विश्व को बचाने की लड़ाई लड़ रहा था-
अरे! इसकी भुजा के हाथ लगाते ही इसकी भुजा ने मुझको ही लपेट लिया है! इसका शिकंजा मेरी हड्डियों को तोड़ रहा है! और इस पानी में मुझे कहीं ऐसी जगह ही नहीं मिल रही है, जिस पर पैर टिकाकर मैं इस भुजा को उखाड़ने लायक ताकत लगा सकूं!
पैर टिकाने की कोई जगह ढूंढनी ही होगी।
ओह!
पैर टिकाने की जगह तो नजर आ गई है! अब मुझे बस उसके पास तक पहुंचना है!
सबसे पहले बढ़ते हुए विष के सागर को रोकना होगा! जैसे पत्तियां हवा से CO_2 खींचकर ऑक्सीजन छोड़ती हैं वैसे ही इसकी भुजाएं पानी को अपने अंदर खींचकर विष उगल रही हैं! इसकी भुजाओं को उखाड़कर विष का उत्पादन रोका जा सकता है!
मेरे विष का कोई भी वार इस पर बेअसर होगा! क्योंकि अब मेरा शरीर भी इसके विष से मिलता-जुलता विष ही पैदा कर रहा है!
नागराज का शरीर गोल-गोल घूमकर भुजा को अपने ही ऊपर लपेटता चला गया-
और जल्दी ही नागराज, पैर टिकने लायक जगह पर पहुंच गया था-
ये है पैर टिकाने की एकमात्र जगह! विषकुंभ का सिर!
नागराज ने पैर अड़ाकर पूरी शक्ति लगाई-

और विषकुंभी की वह भुजा उसके सिर से अलग हो गई-
आऽऽह! एक भुजा तो गई; अब दूसरी भुजा को उखाड़ता हूं;
लेकिन-
अरे! अरे! ये भुजा तो अपने आप बढ़कर एक नए विषकुंभी को बना रही है! यानी ये जीव, स्टार फिश की तरह अपने किसी भी कटे अंग से एक पूरा नया जीव बना सकता है!
अब क्या करूं? अब तो मैं इसकी भुजाएं भी नहीं उखाड़ सकता! वर्ना मुसीबत दुगुनी से चौगुनी हो जाएगी!
एक नया विषकुंभी पैदा होने से विष का सागर और तेजी से फैल रहा है; अब तो विष स्वर्ण नगरी तक पहुंचने ही वाला है; ... अब क्या करूं? कैसे खत्म करूं इन दोनों विषकुंभियों को?
ओ! शायद यह तरीका काम कर जाए.
तुम्हारा इंतजार करने वाला ख्याल गलत निकला, धनंजय, अब तो एक प्राणी द्विगुणित हो गया है, और दूसरा प्राणी हमारी तरफ लपक रहा है.
अब तो अपने बचाव के लिए हमला करना ही पड़ेगा.
लेकिन पहले इस प्राणी को खत्म करते हैं जो हमारी तरफ आ रहा है!
बस इसको विष के सागर से बाहर आ जाने दो!

विष के सागर से बाहर आते ही नागराज पर हमला शुरू हो गया-
आऽsss ह, यानी तो मैं सांस नहीं लूंगा, क्योंकि ऐसा करने से पानी विष बनता जाएगा और विष का सागर बढ़ता जाएगा. अपना दम घुटने से पहले ही मुझको अपना काम पूरा कर लेना है!
लेकिन मैं कैसे पूरा करूं अपना काम? स्वर्णनगरी के योद्धा तो मुझे अपने तक पहुंचने ही नहीं दे रहे हैं. ...
... शायद इच्छाधारी शक्ति का प्रयोग करके मैं इन तक पहुंच सकूं.
आऽsss ह! मैं इन पर नागशक्तियों का प्रयोग करने का खतरा मोल नहीं ले सकता! क्योंकि अगर मेरा स्वरूप बदला है तो मेरी नागशक्तियों का स्वरूप भी बदल गया होगा. न जाने कौन सी नागशक्ति क्या असर करे!
कोई और रास्ता सोचना होगा.
आऽsss ह.
नागराज सोचता ही रह गया, और वह किरण उसको चीरती हुई निकल गई-
ये गायब होकर बच रहा है.
गायब कैसे होगा? हमारे सैंसर इसको अदृश्य रूप में भी ढूंढ निकालेंगे.

ये तो खत्म हो गए, धनंजय
अगर इस पर हमारे हथियारों ने असर किया है, तो उन दोनों प्राणियों पर भी हमारे वारों का असर जरूर होगा।
आइए आपको फोर्स-फील्ड कवच में ढककर विष के सागर में प्रवेश करते हैं। एक प्राणी से तुम निपटना, और दूसरे से मैं निपटता हूँ।
लेकिन विषकुंभियों के पास पहुंचते ही-
उन दोनों का भी वही हाल हुआ जो नागराज का हुआ था-
आऽऽऽह! हमारे हथियार तो 'ऊर्जा कवच' में सुरक्षित हैं, लेकिन हमारे वार विष के संपर्क में आते ही नष्ट हो जा रहे हैं।
हमारे ऊर्जा कवच को भी ये विष धीरे-धीरे नष्ट कर देगा! और हम इसकी पकड़ से छूट नहीं पा रहे हैं।
स्वर्णनगरी के साथ-साथ:
महानगर पर भी तबाही बरस रही थी-
हा हा हा! इस सृष्टि का सबसे बुद्धिमान प्राणी मानव है जो मेरा रास्ता रोकने की क्षमता रखता है। जब सारे मानव नष्ट हो जाएँगे तो मैं बगैर किसी विघ्न के नई सृष्टि की रचना कर सकूंगा
अब इन लोहे के बादलों को मुझे पूरी धरती के ऊपर फैला देना है।

कुछ करिए प्रकृति! प्रदूषण तो और शक्तिशाली होता जा रहा है. ऐसे तो वह पृथ्वी पर प्रलय ला देगा!
मैं क्या करूं ध्रुव! जल के प्रदूषण ने मुझको पहले से ही कमजोर कर रखा था! अब वायु के प्रदूषण ने मेरी रही-सही शक्ति भी खींच ली है!
अगर नागराज जल का प्रदूषण दूर करने में सफल हो जाता तो कम से कम मेरी आधी शक्ति वापस आ जाती!
ओफ! तब तो मुझे ही कोई रास्ता सोचना होगा!
लोहा अपने कड़ेपन के कारण इतना नुकसान पहुंचा पा रहा है! अगर इसके कड़ेपन को हम किसी तरह से खत्म कर सकें तो...
...यस! एक ऐसा तरीका है तो! लेकिन वह सिर्फ आप कर सकती हैं. सुनिए.
ध्रुव ने प्रकृति को पूरी योजना सुना दी-
पता नहीं मैं यह काम कर पाऊंगी या नहीं! लेकिन मैं कोशिश जरूर करूंगी पर उसके लिए मुझे बादलों के पास जाना होगा!
शक्ति क्षीण होने के कारण मैं इतनी दूर से ये काम शायद न कर पाऊं.
वैसे तो मैं अपने आप पूरी पृथ्वी पर कहीं भी पहुंच सकती हूं! लेकिन प्रदूषण मुझको ऐसा करने से रोक रहा है!
ओफ. लेकिन हमारे पास ऐसी कोई चीज नहीं है जो लोहे की बारिश से बचाते हुए बादलों तक जा सके.
ओ यस. हमारे पास ऐसे साधन नहीं है, लेकिन किसी और के पास है.
मैं अभी उससे संपर्क करता हूं!
और दूसरी तरफ- विष के सागर में-
ऊर्जा कवच नष्ट हो रहा है! अब हमारी मृत्यु निश्चित है. और हमारे बाद पूरी स्वर्ण नगरी भी इसी विष में घुल जाएगी.
ऊर्जा कवच नष्ट हो चुका है. ...

लेकिन तभी- दोनों पर कसे शिकंजे खुल गए-
और फिर उन पर अनगिनत सर्पों की पर्तें लिपटने लगीं-
ओऽऽऽ ! इन सर्पों पर विष का असर नहीं हो रहा है! और इनकी पर्त हमको विष के असर से बचा रही है.
और ये सर्प वह प्राणी छोड़ रहा है! यानी... यानी ये मरा नहीं था! और अब वह हमको विष के सागर से बाहर खींचकर पानी में पहुंचा रहा है.
हां: मैंने मरने का सिर्फ नाटक किया था! ताकि मैं इन लोगों के पास पहुंचकर...
... इनके ऑक्सीजन टैंक हासिल कर सकूं: इस जीव से लड़ते समय मुझे यह ख्याल आया कि अगर ऑक्सीजन पर जिन्दा रहने वालों के लिए यह विष घातक है, तो फिर विष उगलने वालों के लिए...
... यह ऑक्सीजन घातक हो सकती है!
नागराज ने ऑक्सीजन टैंकों को सर्प कवच में सुरक्षित कर लिया-

धनंजय अब तक सारी स्थिति को समझ चुका था-
सांप छोड़ने वाला तो एक ही शख्स है विरल! नागराज! यानी ये नागराज है! इसका रूप बदला होने के कारण हम इसको पहचान नहीं पा रहे थे! अब मैं इसको पहचान रहा हूं. और...अरे! धरती से संदेश आ रहा है!
धरती से तो सिर्फ ध्रुव ही मुझको संदेश भेजता है! और वह भी केवल मुसीबत के वक्त!
मुझे ध्रुव के पास जाना होगा! तुम यहां पर रुककर अगर जरूरत पड़े तो नागराज की मदद करना!
क्योंकि इस प्राणी को अगर कोई नष्ट कर सकता है तो सिर्फ नागराज. और कोई नहीं!
'द्वार' के जरिए धनंजय तुरंत ही ध्रुव तक पहुंच गया-
ओ! यहां पर भी बड़ी मुसीबत आई हुई है, और समुद्र में भी! ये हो क्या रहा है ध्रुव?
ये दोनों एक ही शख्स के काम हैं धनंजय! और उसको हराने के लिए हमको तुम्हारी मदद चाहिए!
अभी लो, ध्रुव!
अपने द्वार की मदद से इनको इस लोहे के बादलों के पार पहुंचा दो!...
द्वार से बादलों के पार पहुंचते ही-
प्रकृति ने अपना काम शुरू कर दिया-
ये... ये तू क्या कर रही है प्रकृति! लोहे और वायु-मंडल में मौजूद ऑक्सीजन का संयोग करके नया तत्त्व पैदा कर रही है.
हां प्रकृत! और अम भाषा में इसको जंग लगना कहते हैं; जो वास्तव में लोहे का ऑक्सीकरण होता है.

और जंग इतना भुरभुरा होता है कि मेरी हवा का एक ही तेज झोंक इन बादलों को कण-कण बनकर उड़ा देगा.
ऐसा नहीं होगा! मैं लोहे और वायु की प्रतिक्रिया को रोक दूंगा! लोहे को जंग नहीं बनने दूंगा!
ओह! प्रकृत की शक्ति मुझ पर भारी पड़ रही है! मैं इसका मुकाबला कुछ पलों से ज्यादा नहीं कर पाऊंगी!
हिम्मत मत हारिए प्रकृति! अगर हम ये लड़ाई हार गए...
...तो फिर पूरा युद्ध हार जाएंगे!
प्रकृत आपकी सृष्टि को धूल में मिला देगा!
प्रकृति की शक्ति वापस आने की अब सिर्फ एक सूरत बची थी-
और वह थी, नागराज की जीत-
नागराज ने एक ही साथ दोनों ऑक्सीजन टैंकों के विषकुंभी के खुले मुंहों में घुसा दिया-
और उसका असर लगभग तुरंत ही सामने आ गया-
विषकुंभी तड़प रहे हैं, यही ऑक्सीजन सचमुच इनके लिए जहर का काम कर रही है! और ऑक्सीजन के असर को काटने के लिए दोनों बाहर में फैले विष को फिर से अपने अंदर समेट रहे हैं.
और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है मेरा फिर से सामान्य होता शरीर.

ये... ये तो सचमुच नागराज है! हमसे इसको पहचानने में वाकई गलती हो गई! इसने स्वर्ण नगरी पर मंडरा रहे खतरे को खत्म कर दिया है, लेकिन ये पानी में सांस कैसे ले पा रहा है? खैर! फिलहाल तो इसका शुक्रिया अदा करना चाहिए!
विषकुंभी, विष को खींच ले रहा है लेकिन विष भी इसकी कोई मदद नहीं कर पा रहा है! दोनों आकार में सिकुड़ते जा रहे हैं! और इसके विष खींचने के कारण विष का सागर भी आकार में छोटा होता जा रहा है!
नागराज! तुमको धन्यवाद देने के साथ-साथ हम तुमसे क्षमा भी मांगते हैं! क्योंकि न तो हम तुमको पहचान पाए, और न ही तुम्हारे नेक इरादों को!
मैंने क्षमा और धन्यवाद दोनों ही स्वीकार किए! लेकिन तुम्हारा वह दूसरा साथी कहां गया?
महानगर पर छाए लोहे के बादलों के ऊपर-
ये क्या हो रहा है? लोहा जंग में कैसे बदल रहा है? मेरी रासायनिक प्रक्रिया को तो मैंने रोक दिया है प्रकृति!
दूसरा साथी यानी धनंजय! उसके पास ध्रुव का संदेश आया था! संदेश आते ही वह 'द्वार' के ज़रिए ध्रुव के पास चला गया!
ओह! यानी वहां पर भी कोई मुसीबत टूट रही है! मुझे तुरन्त वहां पर पहुंचना होगा!
परन्तु कैसे?
अब नहीं प्रकृति! मेरी शक्तियां वापस आ रही हैं!
मैं तुमको वहां पर ले जा सकता हूं!
आओ मेरे साथ!

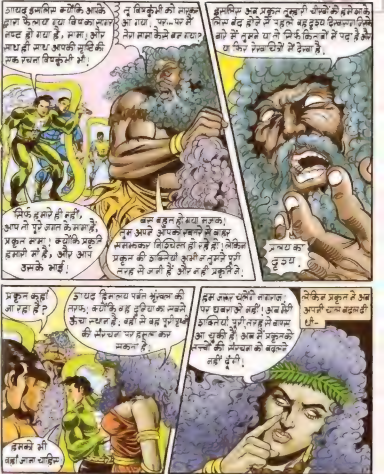
शायद इसलिए क्योंकि आपके द्वारा फैलाया गया विष का सागर नष्ट हो गया है, मामा! और साथ ही साथ आपकी सृष्टि की एक रचना विषकुंभी भी!
तू विषकुंभी को मारकर आ गया, पर... पर मैं तेरा मामा कैसे बन गया?
इसलिए अब प्रकृत तुम्हारी चीखों को हमेशा के लिए बंद होने से पहले वह दृश्य दिखाएगा जिसके बारे में तुमने या तो सिर्फ किताबों में पढ़ा है और या फिर रेखाचित्रों में देखा है.
सिर्फ हमारे ही नहीं, आप तो पूरे जगत के मामा हैं, प्रकृत मामा! क्योंकि प्रकृति हमारी मां है, और आप उसके भाई!
बस बहुत हो गया मज़ाक! तुम अपने आपको खतरे से बाहर समझकर निश्चिन्त हो रहे हो! लेकिन प्रकृत की शक्तियां अभी न तुमने पूरी तरह से जानी हैं और न ही प्रकृति ने!
प्रलय का दृश्य.
प्रकृत कहां जा रहा है?
शायद हिमालय पर्वत श्रृंखला की तरफ! क्योंकि वह दुनिया का सबसे ऊंचा स्थान है! वहीं से वह पूरी पृथ्वी की संरचना पर हमला कर सकता है!
हमको भी वहां जाना चाहिए!
हम जरूर चलेंगे नागराज! पर घबराओ नहीं! अब मेरी शक्तियां पूरी तरह से वापस आ चुकी हैं! अब मैं प्रकृत के तत्त्वों की संरचना को बदलने नहीं दूंगी!
लेकिन प्रकृत ने अब अपनी चाल बदल दी थी-

वह प्रकृति की सृष्टि को नष्ट करने के लिए प्रकृति द्वारा बनाए गए तत्वों को बदलने के बजाए, उनको ही अपना हथियार बनाने जा रहा था -
धूम्रकेतु! मेथक! लावला! आओ!
आदेश करें!
इस बार तुम्हारा काम किसी सृष्टि की संरचना करना नहीं है! बल्कि इस सृष्टि का विध्वंस करना है!

प्रकृति भी सबके साथ हिमालय की ऊँचाइयों पर पहुंच चुकी थी-
हे ईश्वर! ये कैसे हो सकता है? प्रकृत ने सृष्टि की ताकतों को साकार रूप दे दिया है, कुछ कुछ वैसा ही जैसा कि तुम बेजान धातु को चलते फिरते यांत्रिक रोबोट में बदल देते हो! ऐसा कर सकने की शक्ति तो मेरे पास भी नहीं है!
और अब प्रकृत उनको प्रलय फैलाने के लिए भेज रहा है!
प्रकृत ने चालाकी से काम लिया है! वह मेरे द्वारा बनाए गए तत्वों की संरचना को बदल नहीं रहा है बल्कि उनकी मदद से ही मेरी सृष्टि को नष्ट करने की योजना बना रहा है
तीनों शक्तियों ने अपने-अपने क्षेत्र को चुनकर अपना काम शुरू कर दिया-
मंथक ने समुद्र क्षेत्र को दूध की तरह मथना शुरू कर दिया-
और सभी महासागर एक अत्यन्त विशाल भंवर में तब्दील हो गए-
ये विशाल भंवरें समुद्री जीवन को नष्ट करने के साथ-साथ जमीन के तटों को भी तोड़ रही थीं-
लेकिन यह अकेली मुसीबत नहीं थी, लावाक्ष की ऊष्मा पर्वतों और ध्रुवों पर मौजूद बर्फ को पिघलाकर समुद्री जल का स्तर भी बढ़ा रही थी-
समुद्री तट से लगे शहर तेजी से पानी भरा श्मशान बनते जा रहे थे! अगर कुछ सुरक्षित था-

तो सिर्फ ऊंचे जमीनी क्षेत्र-
या शायद अब वे भी सुरक्षित नहीं बचे थे-
धूम्रकेतु के वारों ने थल को भी छोटे-छोटे हिस्सों में तोड़ना शुरू कर दिया था-
प्रलय आ चुकी थी-
पूरी पृथ्वी नष्ट हो रही है प्रकृति! और साथ ही साथ उस पर का जीवन भी! कुछ करिए प्रकृति! जल्दी!
मैं कोशिश कर रही हूं! लेकिन मैं सिर्फ इनकी गति को धीमा कर पा रही हूं! इनको रोक नहीं पा रही हूं! प्रकृत ने इनको जीवित रूप देकर इनकी शक्तियों को बढ़ा दिया है!
लावा के असर को कम करने के लिए मैं...शायद कुछ मदद कर सकता हूं। शीत नागकुमार, तुम्हारी प्रजाति के सर्पों के संयुक्त प्रयासों से पिघलती बर्फ फिर से जम सकती है और समुद्र का स्तर बढ़ना रुक सकता है! धनंजय के 'द्वार' तुम्हारे साथी सर्पों को सही स्थान पर पहुंचा देंगे!
और शीतनागों को सही स्थान पर पहुंचाने के बाद हम स्वर्ण मानव, मेथक को रोकने की कोशिश करेंगे!

तब तो मुझे राहत मिल जाएगी। मैं धूमकेतु पर अपना ध्यान केन्द्रित करके उसकी शक्ति को नष्ट कर सकती हूं। फिर मैं एक-एक करके लावाला और मंथक को भी काबू में कर लूंगी! तुम लोगों को सिर्फ कुछ देर के लिए लावाला और मंथक के असर को कम करते रहना होगा!
योजना पर तुरन्त अमल शुरू हो गया-
शीतनागों की टोली बर्फीले स्थानों पर पहुंचकर फिर से उनको जमाने लगी-
अरे! ये बर्फ को फिर से जमा रहे हैं! पहले इनको नष्ट करना होगा!
लावाला बर्फ को पिघलाने के बजाय शीतनागों से निपटने में व्यस्त हो गया-
उधर समुद्र के ऊपर स्वर्ण नगरी वासी मंथक को रोकने की योजना बना रहे थे-
बवंडर पैदा करने के लिए वायु का होना जरूरी है! अगर हम इस क्षेत्र में अपने यंत्रों की मदद से 'वैक्यूम' पैदा कर सकें तो मंथक को बवंडर पैदा करने के लिए वायु ही नहीं मिलेगी।
योजना उत्तम है! काम शुरू करो!
आऽऽऽह! हम जैसे-जैसे अपने यंत्रों द्वारा हवा खींचने की शक्ति को बढ़ा रहे हैं, वैसे-वैसे मंथक भी अपनी शक्ति बढ़ाता जा रहा है!
हमारी शक्ति की तो एक सीमा है! पर इसकी शक्ति तो असीमित लगती है!
हम इसको रोक नहीं पाएंगे!

शीतनाग भी कुछ खास नहीं कर पा रहे थे-
आश्चर्य है! ये अपने शरीर के तापमान को बढ़ाता ही जा रहा है! ऐसा लगता है कि जैसे इसके शरीर में सैकड़ों सूर्य समाए हुए हों। इधर हम बर्फ जमाते हैं, उधर दुगुनी बर्फ पिघल जाती है!
पृथ्वी के जीव तो असफल हो रहे थे-
खुद प्रकृति भी धूम्रकेतु को रोकने में सफल नहीं हो पा रही थी-
आऽऽऽह! इसका वेग आश्चर्यजनक है!
मैं धूम्रकेतु को रोकने में अपनी पूरी शक्ति लगा रही हूं। फिर भी धूम्रकेतु रुक क्यों नहीं रहा है ?
ओफ! हम अपने आपको कितना असहाय महसूस कर रहे हैं! पृथ्वी हमारे सामने नष्ट हो रही है, और हम कुछ कर नहीं पा रहे हैं!
प्रकृत में ऐसा कुछ तो है जो उसको प्रकृति से ज्यादा शक्तिशाली बना रहा है। पर वह है क्या ?
वह क्या है ? समझ गया नागराज! आओ, तुमने मुझे पृथ्वी को बचाने का रास्ता दिखा दिया है नागराज!
मैंने कौन सा रास्ता दिखाया है!
प्रकृत का पहला हमला याद करो नागराज! पानी से भरी घाटी में उल्का का गिरना! भला प्रकृत जैसी शक्ति छोटी सी उल्का का मामूली हमला क्यों करेगी ?
और वह भी हिमालय की ऊंचाई जैसी वीरान जगह पर! प्रकृत का असली हमला उसी के बाद शुरू हुआ है!
तुम्हारा मतलब है कि वह उल्का नहीं थी, कुछ और था ?
हां, नागराज! कुछ ऐसा जो प्रकृत को प्रकृति के शरीर यानी पृथ्वी को बदलने में मदद दे रहा है।
यह रही घाटी! कूदो पानी के अंदर!

काम आसान नहीं था! क्योंकि पानी बहुत ठंडा था, गहराई बहुत ज्यादा, और समय बहुत कम-
उल्का तो कहीं नजर नहीं आ रही है! लेकिन यहां की चट्टान में एक छेद जरूर बना हुआ है!
यानी उल्का इस चट्टान में ड्रिल की तरह छेद करते हुए अंदर समा गई है!
और इसमें अंदर जा सकने का रास्ता नहीं है!
सर्प रस्सी का प्रयोग भी मैं नहीं कर सकता! क्योंकि मेरे सर्प इस ठंड को सह नहीं सकते और शीतनाग मेरे शरीर के अंदर फिलहाल नहीं है!
तो फिर इन चट्टानों को ध्वंसक सर्पों की मदद से उड़ाओ नागराज!
ध्वंसक सर्प चट्टानों की दरारों के अंदर डायनामाइट की छड़ों की तरह फिट होते गए-
और फिर एक धमाके के साथ घाटी की दीवार में एक छेद हो गया-
और पानी बाहर बह निकला-
देखते ही देखते घाटी पानी से खाली हो चुकी थी-
अब तुम्हारी सर्प रस्सी उल्का को निकाल सकती है नागराज!
मैं वही कर रहा हूं ध्रुव!
और फिर-
देखिए प्रकृति! ये है प्रकृति की आश्चर्यजनक शक्ति का रहस्य!
ये तो कोई यंत्र है!
हां, ये मेरे द्वारा विकसित किया गया यंत्र है! ये मुझको तीव्र विकास करने की शक्ति देता है! और इसको मेरे अलावा और कोई नष्ट नहीं कर सकता! प्रकृति भी नहीं!

आप... यानी आपकी शक्ति ही इसको नष्ट कर सकती है!
तो फिर ऐसा ही होगा।
नागराज का हाथ घूमा-
और सर्परस्सी ने 'उल्का यंत्र' को हवा में उछालकर उड़ते लावाला के रास्ते में पहुंचा दिया-
और 'उल्का यंत्र' के परखच्चे उड़ गए-
ओह! लावाला की ज्वाला ने यंत्र को नष्ट कर दिया! क्योंकि वह मेरी ही शक्ति था।
लावाला नष्ट हो गया है! अब मेरा धूम्रकेतु और मंथक पर भी नियंत्रण नहीं रहेगा! वे भी अपने आप नष्ट हो जाएंगे!
मैं तुमको भी मान गया बहन प्रकृति और तुम्हारी सृष्टि मानव को भी! मैं तो इसलिए मानवों की सृष्टि को नष्ट करना चाहता था क्योंकि वे तुमको नुकसान पहुंचा रहे थे!
पर तुम्हारी ममता के आगे मेरी सारी शक्तियां हार गईं! तुमने उनका ही साथ दिया जो तुमको ही नुकसान पहुंचा रहे थे।
अपने बच्चों से कोई नाराज नहीं होता प्रकृत! वैसे भी मेरे ख्याल से ये अपना सबक सीख चुके हैं!
हां! हम अपनी गलतियों से सीख लेंगे! और इस बात का पूरा ध्यान रखेंगे कि प्रकृति मां को अब कभी नुकसान न पहुंचे!
मैं इस वादे पर नजर रखूंगा! और अगर वादा टूटा तो फिर वापस आऊंगा, ये वादा रहा!

समाप्त.